भजन

तर्ज : दुनियाँ करे सवाल तो
कोई आ सको तो आईयों समया ये आखरी
खिन की विलम्ब ना कीजिया,समया ये आखरी

1. उठना है हँस के धाम में ऐसा जतन करें
अब कहनी सुननी ना रही रहनी पे पग धरें
झूठी उम्मीद छोड़ियो समया...

2. हम तन है प्राणाधार के उनसे जुदा नहीं
इस वास्ते यूँ भूलना वाजिब तो है नहीं
चरणों से बँध बाँधीयों समया.....

3. विरहा जगे जो धाम का, तो बात कुछ बने
हक इलम और ईमान से कुरबानीयाँ करें
सिनगारे-इश्क साजियों समया.....